समास परिचय

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» समास: संक्षेपण और पद-निर्माण

प्रश्न 1 (आसान). 'गायने कुशला' का समास रूप क्या होगा?

उत्तर – गायनकुशला

प्रश्न 2 (आसान). समास में 'च' का क्या होता है?

उत्तर – 'च' का लोप (हटाना) होता है।

प्रश्न 3 (मध्यम). 'राज्ञ: पुरुष:' को संक्षेप पद में बदलिए।

उत्तर – राजपुरुष:

प्रश्न 4 (कठिन). समास करते समय विभक्ति-लोप और अर्थ-संबंध में क्या संबंध रहता है?

उत्तर – विभक्ति-लोप से पद संक्षेप बनता है, पर विग्रह जैसा अर्थ-संबंध संक्षेप रूप में भी बना रहता है।

» अलुक् समास: जहाँ विभक्ति-लोप नहीं होता

प्रश्न 5 (आसान). अलुक् समास में मुख्य पहचान क्या है?

उत्तर – जहाँ विभक्ति-लोप नहीं होता।

प्रश्न 6 (आसान). NCERT में अलुक् समास का एक उदाहरण लिखो।

उत्तर – वनेचर: (या खेचर: / युधिष्ठिर:).

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर किसी समास में पदों के बीच की विभक्ति जस की तस रहे, तो वह समास किस नाम से जाना जाएगा?

उत्तर – अलुक् समास।

प्रश्न 8 (कठिन). समास में 'हर बार विभक्ति-लोप' मानना ठीक है या नहीं? वजह सहित लिखो।

उत्तर – नहीं। क्योंकि कहीं-कहीं पदों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं भी होता है, ऐसे समास अलुक् कहलाते हैं।

» समास के मुख्य भेद (छः प्रकार)

प्रश्न 9 (आसान). कौन से समास में पहला पद प्रधान होता है?

उत्तर – अव्ययीभाव

प्रश्न 10 (आसान). तत्पुरुष समास के दो उपभेदों के नाम बताओ.

उत्तर – कर्मधारय और द्विगु

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर समास में 'कोई अन्य पद' प्रधान हो तो वह कौन सा समास कहलाता है?

उत्तर – बहुव्रीहि

प्रश्न 12 (कठिन). पदों की प्रधानता के आधार पर समास के चार मुख्य भेद कौन से हैं?

उत्तर – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि

» अव्ययीभाव समास: अव्यय-प्रधान और नपुंसकलिङ्ग

प्रश्न 13 (आसान). “यथाशक्ति” का विग्रह क्या है?
उत्तर – शक्तिम् अनतिक्रम्य

प्रश्न 14 (आसान). “निर्विघ्नम्” का विग्रह क्या है?
उत्तर – विघ्नानाम् अभाव:

प्रश्न 15 (मध्यम). “उपगङ्गम्” का विग्रह और समास पहचान क्या होगी?
उत्तर – विग्रह: गङ्गाया: समीपम्; समास: अव्ययीभाव

प्रश्न 16 (कठिन). “अनुरूपम्” का विग्रह लिखो और बताओ कि इसमें कौन-सा पद प्रधान है?
उत्तर – विग्रह: रूपस्य योग्यम्; प्रधान: पहला अव्यय-प्रधान पद (अनु-)

» तत्पुरुष समास: उत्तरपद प्रधान और विभक्ति-लोप

प्रश्न 17 (आसान). “धनेन हीन:” का तत्पुरुष समास-रूप लिखो।
उत्तर – धनहीन:

प्रश्न 18 (आसान). “भूताय बलि:” का तत्पुरुष समास-रूप लिखो।
उत्तर – भूतबलि:

प्रश्न 19 (मध्यम). “शरेण विद्ध:” को तत्पुरुष समास में बदलो।
उत्तर – शरविद्ध:

प्रश्न 20 (कठिन). “सभा यां पण्डित:” (सभायां पण्डित:) को तत्पुरुष समास-रूप में लिखो।
उत्तर – सभापण्डित:

प्रश्न 21 (कठिन). “सिंहात् भीत:” को तत्पुरुष समास में बदलो।
उत्तर – सिंहभीत:

» कर्मधारय तत्पुरुष: विशेषण-विशेष्य/उपमा के अनुसार

प्रश्न 22 (आसान). ‘नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम्’ में कर्मधारय का प्रकार बताओ।
उत्तर – पूर्वपद विशेषण (नीलम्) और उत्तरपद विशेष्य (उत्पलम्)।

प्रश्न 23 (आसान). ‘घन इव श्याम: = घनश्याम:’ में उपमान-उपमेय कौन है?
उत्तर – उपमान: घनम्, उपमेय: श्यामः।

प्रश्न 24 (मध्यम). ‘शीतं च उष्णम् = शीतोष्णम्’ में दोनों पद किस प्रकार हैं?
उत्तर – दोनों पद विशेषण (शीत और उष्ण दोनों गुण-बोधक)।

प्रश्न 25 (कठिन). ‘चन्द्र इव मुखम् = चन्द्रमुखम्’ में कौन-सा रूप है और अर्थ कैसे समझोगे?
उत्तर – यह उपमान-उपमेय रूप है। अर्थ: चंद्र जैसा मुख/चेहरा।

प्रश्न 26 (कठिन). ‘नीलोत्पलम्’ को विशेषण-विशेष्य में तोड़कर लिखो (विग्रह करके)।
उत्तर – नीलम् उत्पलम्।

» द्विगु तत्पुरुष: संख्यावाची पूर्वपद से समूहार्थ

प्रश्न 27 (आसान). “सप्तानां दिनानां समाहारः” = ?
उत्तर – सप्तदिनम्

प्रश्न 28 (आसान). “पञ्चानां रात्रीणां समाहारः” = ?
उत्तर – पञ्चरात्रम्

प्रश्न 29 (मध्यम). “चतुर्णां युगानां समाहारः” का समस्तपद लिखो।
उत्तर – चतुर्युगम्

प्रश्न 30 (मध्यम). दिए गए संकेत: संख्यावाची पूर्वपद + समूहार्थ। “त्रयाणां लोकानां समाहारः” का द्विगु रूप बताइए।
उत्तर – त्रिलोकी

प्रश्न 31 (कठिन). विग्रह बनाओ: “पञ्चानां वटानां समाहारः” को समास करते समय समस्तपद क्या होगा? और प्रकार क्या है?
उत्तर – पञ्चवटी; प्रकार द्विगु समास

प्रश्न 32 (कठिन). मान लो ‘अष्ट’ (8) के “अध्यायों का समूह” बनाना है। द्विगु समास का समस्तपद लिखो।
उत्तर – अष्टाध्यायी (अष्टानां अधयायानां समाहारः से)

» द्वन्द्व समास: दोनों पद प्रधान और ‘च’ का विग्रह

प्रश्न 33 (आसान). लवश्च कुशश्च = ?
उत्तर – लवकुशौ

प्रश्न 34 (आसान). धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च को द्वन्द्व में समस्तपद रूप में लिखो।
उत्तर – धर्मार्थकाममोक्षा:

प्रश्न 35 (मध्यम). रामश्च कृष्णश्च = ? और यह किस प्रकार का द्वन्द्व है (इतरेतर/समाहार)?
उत्तर – रामकृष्णौ; इतरेतर द्वन्द्व

प्रश्न 36 (मध्यम). पुत्रश्च पौत्रश्च = ? और यह समाहार द्वन्द्व क्यों है?
उत्तर – पुत्रपौत्रम्; क्योंकि यहाँ समूह/संग्रह (वंशजों का समाहार) अर्थ प्रमुख है।

प्रश्न 37 (कठिन). विग्रह: माता च पिता च – द्वन्द्व समास का समस्तपद लिखो। (क्रम-नियम याद रखो: श्रेष्ठ/पूज्य पहले)
उत्तर – मातापितरौ

प्रश्न 38 (कठिन). ईशश्च कृष्णश्च = ?; और यहाँ विग्रह में ‘च’ क्यों है?
उत्तर – ईशकृष्णौ; क्योंकि द्वन्द्व में दोनों पद प्रधान होते हैं, इसलिए ‘च’ से साथ जोड़ा जाता है।

» बहुव्रीहि समास: ‘यस्य सः’ विग्रह और अन्य पद की प्रधानता

प्रश्न 39 (आसान). ‘दश आननानि यस्य सः’ का विग्रह-आधारित अर्थ लिखो।
उत्तर – जिसके दस मुख हों (दशाननः)

प्रश्न 40 (आसान). ‘पाषाणवत् हृदयं यस्य सः’ का भावार्थ क्या होगा?
उत्तर – जिसका हृदय पाषाण की तरह हो (पाषाणहृदयः)

प्रश्न 41 (मध्यम). ‘चन्द्र इव मुखं यस्याया सा’ में ‘यस्या’ क्यों आया है?
उत्तर – क्योंकि ‘सा’ स्त्रीलिंग है–जिसके पास/जिसकी ‘मुख’ वाली विशेषता नारी के लिए है।

प्रश्न 42 (कठिन). एक-एक करके विग्रह का भाव लिखो: ‘कमलम् इव नेत्रे यस्य सः = ?’ – और फिर नाम बताओ।
उत्तर – भावार्थ: ‘जिसकी आँखें कमल जैसी हों’। नाम: ‘कमलनेत्रः’।

» एकशेष: कई पदों के लोप से एक ही पद का शेष

प्रश्न 43 (आसान). माता च पिता च का एकशेष रूप क्या होगा?
उत्तर – पितरौ

प्रश्न 44 (आसान). दुहिता च पुत्रश्च का एकशेष रूप क्या होगा?

उत्तर – पुत्रौ

प्रश्न 45 (मध्यम). 'पिता च माता च' में एकशेष के नियम के अनुसार शेष कौन-सा पद बनेगा?

उत्तर – पुंल्लिङ्ग होने के कारण शेष पद 'पिता' रहेगा

प्रश्न 46 (कठिन). बालकश्च बालकश्च बालकश्च = किस प्रकार का एकशेष रूप माना जाएगा? अंतिम पद का रूप लिखो।

उत्तर – बालका: (एकशेष में लोप होकर एक ही पद शेष रहता है)

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. 'सीता च रामश्च' का समास करके एक पद बनाइए।

› पहले पहचानो–यहाँ दो पद हैं: 'सीता' और 'रामश्च'।

› दूसरा, जोड़ने वाला समुच्चय-बोधक 'च' है–समास में 'च' का लोप होता है।

› अब दोनों पदों को जोड़कर नया समस्त-पद बनाओ: 'सीता + राम' का संयुक्त रूप।

› दिए गए उदाहरण के अनुसार अंतिम रूप लिखो: 'सीतारामौ'।

उत्तर – 'सीता च रामश्च' = 'सीतारामौ'

उदाहरण 2. दिए गए समासों में बताओ कि कौन-सा अलुक् समास है: (i) राजपुरुष: (ii) सीतारामौ (iii) वनेचर:

› राजपुरुष: और सीतारामौ में पहले वाली बात याद करो–इनमें विभक्ति-लोप (और 'च' का लोप) होता है, इसलिए ये अलुक् नहीं होंगे।

› फिर वनेचर: पर ध्यान दो–NCERT में 'यथा– खेचर:, युधिष्ठिर:, वनेचर: आदि' कहकर अलुक् के उदाहरण दिए हैं।

› इसलिए (iii) वनेचर: अलुक् समास है।

उत्तर – अलुक् समास: (iii) वनेचर: । (i) राजपुरुष:, (ii) सीतारामौ अलुक् नहीं हैं।

उदाहरण 3. परीक्षा में पूछा गया है कि 'प्रतिदिनम्' कौन सा समास है? और 'रामलक्ष्मणौ' कौन सा समास है?

› पहला उदाहरण: 'प्रतिदिनम्'. यहाँ 'प्रति' पहला पद है और 'दिनम्' दूसरा पद है. 'प्रति' का मतलब है 'हर एक'. 'प्रति' शब्द प्रधान है, इसी से पता चल रहा है कि हर दिन की बात हो रही है.

› क्योंकि यहाँ 'पहला पद' प्रधान है और वह अव्यय भी है, तो यह 'अव्ययीभाव समास' होगा.

› दूसरा उदाहरण: 'रामलक्ष्मणौ'. इसका विग्रह होगा 'रामः च लक्ष्मणः च' यानी 'राम और लक्ष्मण'.

› यहाँ 'राम' भी उतना ही ज़रूरी है जितना 'लक्ष्मण'. दोनों पदों की अपनी-अपनी प्रधानता है. कोई छोटा-बड़ा नहीं.

› जब दोनों पद प्रधान होते हैं, तो वह 'द्वन्द्व समास' होता है.

उत्तर – 'प्रतिदिनम्' अव्ययीभाव समास है और 'रामलक्ष्मणौ' द्वन्द्व समास है.

उदाहरण 4. "प्रत्यक्षम्" समास है या नहीं, और विग्रह करके अर्थ लिखो।

› शब्द 'प्रत्यक्षम्' में 'प्रति' जैसे अव्यय-सा भाव पहले है–यही प्रधान दिशा देता है।

› दिए उदाहरण के अनुसार विग्रह देखें: पाठ में है "प्रत्यक्षम् = अक्णो: प्रति"

› विग्रह का अर्थ समझो: 'आँख (अक्ष) के प्रति' यानी आँख के सामने/प्रत्यक्ष रूप में।

› इसलिए यह अव्ययीभाव समास है; समस्त पद अव्यय-सा भाव में आता है और नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त रहता है।

उत्तर – अव्ययीभाव समास: "प्रत्यक्षम् = अक्णो: प्रति" – आँख के सामने/आँखों से दिखाई देने वाला, प्रत्यक्ष।

उदाहरण 5. "राज्ञ: पुरुष:" को तत्पुरुष समास बनाओ और समास-रूप लिखो।

› यहाँ दोनों पद हैं: राज्ञ: (पूर्वपद) और पुरुष: (उत्तरपद)।

› तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है, यानी पुरुष: आगे प्रधान रहेगा।

› अब पूर्वपद 'राज्ञ:' की विभक्ति का लोप करना है। 'राज्ञ:' में षष्ठी विभक्ति का रूप है (द्वितीया से सप्तमी के अंदर)।

› समास में 'राज्ञ:' का विभक्ति-चिह्न हटाकर 'राज-' रखते हैं और पुरुष: के साथ जोड़ देते हैं।

› अतः समास-रूप बनेगा–राजपुरुष:।

उत्तर – राजपुरुष:

उदाहरण 6. निम्न समस्तपद का कर्मधारय प्रकार बताइए: 'कमलम् इव मुखम् = कमलमुखम्'

› पहले पद 'कमलम्' देखें–क्या यह किसी चीज़ से तुलना कराने वाला है? हाँ, 'इव' से जुड़कर यह उदाहरण/जैसा बताता है।

› बीच का 'इव' भाव (जैसा/like) बताता है कि यह उपमा है।

› इसलिए 'कमलम्' उपमान है और 'मुखम्' (चेहरा) उपमेय है।

› अब निष्कर्ष: पूर्वपद उपमान और उत्तरपद उपमेय–यह कर्मधारय तत्पुरुष का दूसरा प्रकार है।

उत्तर – 'कमलम् इव मुखम् = कमलमुखम्' कर्मधारय तत्पुरुष: पूर्वपद उपमान और उत्तरपद उपमेय (उपमा के अनुसार)।

उदाहरण 7. "षट्" (6) को पूर्वपद मानकर "दिनों का समूहार्थ" वाला द्विगु समास बनाइए। (अर्थ: छह दिनों का समूह)

› पूर्वपद की संख्या पहचानो: षट् = 6

› समूह का भाव तय करो: "दिनानां समाहारः" यानी दिनों का समूह

› विग्रह बनाओ: "षटानां दिनानां समाहारः"

› अब समास करके समस्तपद बनाओ: संख्या वाला रूप पहले और 'दिन' को जोड़कर द्विगु रूप बनता है: "षड्दिनम्"

उत्तर – षड्दिनम् (षटानां दिनानां समाहारः)

उदाहरण 8. निम्नलिखित पदों का द्वन्द्व समास बनाइए और विग्रह लिखिए: रामश्च केशवश्च

› यहाँ 'च' का विग्रह स्पष्ट है–राम और केशव दोनों पद प्रधान हैं, इसलिए द्वन्द्व है।

› क्रम-नियम देखें: "कम स्वर वर्णों वाले पद को पहले रखा जाता है।"

› राम (आ, अ आदि) और केशव में स्वर गिनकर कम स्वर वाला पद पहले आएगा; पाठ के नियम/उदाहरण से दिया गया परिणाम यही बनता है: राम पहले।

› अब दोनों को मिलाकर समस्तपद बनाओ: राम + केशव रामकेशवौ।

› विग्रह वापस लिखो: रामश्च केशवश्च = रामकेशवौ।

उत्तर – रामश्च केशवश्च = रामकेशवौ (द्वन्द्व समास; दोनों पद प्रधान; विग्रह में 'च')

उदाहरण 9. विग्रह करके अर्थ लिखो: 'चक्रं पाणौ यस्य सः = ?'

› देखो प्रश्न में 'पाणौ यस्य' जैसा भाव है–मतलब 'जिसके हाथ में…'

› 'चक्रं' = चक्र (डिस्क/अस्त्र)

› 'पाणौ यस्य' के साथ 'यस्य सः' भाव जोड़ो: 'जिसके हाथ में चक्र हो'

› समस्तपद बनता है: 'चक्रपाणि'

उत्तर – 'चक्रं पाणौ यस्य सः' का अर्थ: 'जिसके हाथ में चक्र हो' = चक्रपाणिः।

उदाहरण 10. "माता च पिता च" का एकशेष रूप लिखो और बताओ क्यों।

› वाक्य में दो पद हैं: माता (स्त्रीलिङ्ग) और पिता (पुंल्लिङ्ग)।

› एकशेष में अन्यय (अर्थ देने वाले दूसरे) पदों का लोप होकर एक ही पद शेष रहता है।

› लिङ्ग नियम लगाओ: एकशेष में पुंल्लिङ्ग पद ही शेष रहता है।

› इसलिए शेष पद 'पिता' होगा और द्विवचन रूप 'पितरौ' बनता है।

उत्तर – माता च पिता च पितरौ (क्योंकि एकशेष में पुंल्लिङ्ग पद शेष रहता है)।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- समास के प्रश्न में विग्रह और फिर 'लोप' करके समस्त-पद ज़रूर लिखना।
- अलुक् पहचान हमेशा 'विभक्ति-लोप है या नहीं' से करो।
- बोर्ड परीक्षा में सीधे 'कौन सा समास है?' यह प्रश्न आता है, तो हर भेद की पहचान और उदाहरण अच्छे से याद कर लेना.
- पहले पद को देखें–अव्यय-प्रधान हुआ तो 99% अव्ययीभाव मानो।

- उदाहरणों में 'शरणागत, धनहीन, अग्निदग्ध' जैसे रूपों को नियम-आधारित लिखो–विभक्ति भूलना नहीं।
- NCERT/बोर्ड में उदाहरण देकर 'इव/जैसा' और 'विशेषण-विशेष्य' से प्रकार पूछते हैं–अर्थ ज़रूर मिलाओ।
- बोर्ड/टर्म परीक्षाओं में द्विगु पहचान के लिए 'संख्या + समूहार्थ' लिखना जरूर आता है।
- NCERT/बोर्ड में पहचान पूछते हैं: 'च' विग्रह और दोनों पद प्रधान–यही लिखो।
- बोर्ड/एक्ज़ाम में विग्रह में 'यस्य सः/यस्या' सही लिखोगे तो अर्थ भी सही हो जाएगा।
- प्रश्न में लिङ्ग देखो–एकशेष में पुंल्लिङ्ग ही शेष रहता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› - समास = विभक्ति/'च' लोप + एक पद + वही अर्थ
› विग्रह में विभक्ति लोप न हो अलुक्
› समास के मुख्य 4 भेद (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि) और तत्पुरुष के 2 उपभेद (कर्मधारय, द्विगु).
› - पहला पद अव्यय + प्रधान; समस्त पद अव्यय (नपुंसकलिङ्ग)।
› तत्पुरुष: उत्तरपद प्रधान, द्वितीया-सप्तमी विभक्ति लोप।
› - तीन रूप: विशेषण-विशेष्य, उपमान-उपमेय, दोनों विशेषण
› - द्विगु = संख्या + समूह; विग्रह में षष्ठी (mostly)
› द्वन्द्व: दो प्रधान, 'च' विग्रह; क्रम: ह्रस्व/कम स्वर/पूज्य पहले
› बहुव्रीहि: 'यस्य सः' = 'जिसके पास...' प्रधानता अन्य पद
› एकशेष = लोप होकर एक पद; शेष पुंल्लिङ्ग